

१५८

मं मोपरापूरा या पोरिपली

ASHA ARCHIVES

3501

समस्तमन्त्राणां हस्तः समस्तप्राणविक्रमः ॥ श्री
नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते ॥
नमो राउमन्त्रे दन्ती वा नमो ॥ दिव्यं नृपिणी ॥
नमो भगवते नमो सर्वकोमलं नमो ॥

गुनव नमः ॥ ॥ धेवीय हाने ॥
सजीव ह्य ॥ ॥ गकिनवी नद्य ॥
गमहाधुयो गिनी ना ॥ मृत्तु ॥ नपु ॥
गमि ॥ वृत्त ॥ गुनि ॥ वाक् ॥ ॥ य ॥
वर्तुन जग मद्यः ॥ दर्वि कग लाय ॥ ० य ॥ ३ ॥

पा ३

॥ गुन लभ यथा ॥ वेधन नयूजाः धूपः दीपान्कं ॥ ॥
आमरु नादि यूप्य लाज नं ॥ ॥ य ॥ लाजन समुप्यनं ॥
नानादि वन्दन सिद्ध वर खल ॥ अथ क म्मा वनि य
द्वानेन ॥ जात्म यूप्य जा नं ॥ ॥ माहनि साधनं ॥ ॥ य ॥
आदाव मालिनी पः ॥ थ ॥ अमृक निविद्या ॥ थ ॥ अवा

हयामि ॥ पंचवलिदानं ॥ ॥ आत्मादि सकलसंयंवां
रुगद्राशगर्भं ॥ त्रिगत्तु यत्र गत्तु त्रिगत्तु गाम्
लादिमुख ॥ मधनं ॥ ॥ अथ आवाहनादियंथा म
थं कृमिनयूजा धूपदीपस्तोत्रात्मकं ॥ ॥ विधुयूजा
यगुयाग ॥ मधुरधवावया आदकं न विन्दु प्रिकोष

वाय ॥ आत्मादि सकलसंयंवां ॥ मधुयूजा ॥
अग्निहोत्रक ॥ अमृगं आवहीति ॥ ॥ गमां को मा
नीयूजा ॥ आवाग ॥ कुर्यान् आहवनीय ॥ ॥
इव ह्ययक ॥ वक्रं ह्यय ॥ ॥ को मा नीयायुमादस
कलसंविष ॥ गय्यं ॥ पुनपुनगि ॥ वाक ॥ को मा

ASHA ARCHIVES

3501

नी था अमच्छाय ॥ ॥ वहनी मगविद्यावनीलकाका
या अरवन् ॥ ॥ या गमलुपसुप्रिका लघुका लेवाया
वचनवाय ॥ कः महापात्र न यावयुजाचनयावि
विरथं प्रदीय जयस्मात् ॥ साधकस्य कामे न कि
यागद्वैतकायदवस्तुकाय ॥ ॥ गमासहपात्रास्था

नं ॥ अरिषकविन्दना ॥ ॥ अं उजः पात्रदवस्तुकाय ॥
नकि यागस्वजयप्रकाय ॥ यल्लुमनूथ ॥ अयासा
नकि ॥ ॥ यनः कुं अनासा मयागु ॥ ॥ यनः यना अग्नि
यागु ॥ संवला ॥ ॥ गिला किस्तु ॥ ॥ अवंवीनजनस्यः
वचनवाय ॥ सायाल ॥ अथकाकायाल ॥ अथवागु

[illegible]

स्थाने निधुं ॥ मूर्या सादि ॥ आग वृत्तः ॥ वसा च
यथापहानमंशाल जागव लपदु गिनं कूजा ॥ ५५
मं ॥ ५५ ॥ रवा मयाः सका आमन ॥ ५६ ॥ निधे वा य
हा पूजा याध निपा निसे मायः ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥
सनि कू कू कल लिधू जा या दा व वं तस्ते न समं य

महाप्र

कविरः

६५० ६५० ॥



महाप्र

कानूर

सचरु

भाजवधखकुरन सह नं वि भासुह खसखु इत्या